ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

एवं

शिक्षा विभाग

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

दिनांक : 12-14 मार्च, 2016

प्रतिवेदन/रिर्पोट

कार्यशाला

कार्यक्रम विवरण	कार्यक्रम का स्वरूप	कार्यक्रम स्थल	अवधि	आयोजक
मूडल्स के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण	राष्ट्रीय कार्यशाला	वर्धा, महाराष्ट्र	12-14 मार्च, 2016	शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

12-14 मार्च, 2016 को आयोजित 'मूडल्स के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला

राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारम्भ हबीब तनवीर सभागार में दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा विषय-विशेषज्ञ के रूप में प्रो. ओ. एस. के. एस. शास्त्री तथा प्रो. के. श्रीनिवास आदि मौजूद थे। विषय-विशेषज्ञ प्रो. के. श्रीनिवास (राष्ट्रीय शैक्षणिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, दिल्ली) ने संक्षेप में कार्यशाला का परिचय देते हुए सर्वसमावेशी शिक्षण पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि हमारा संविधान जाति, वर्ग, धर्म, एवं लैंगिक आधार पर किसी भी प्रकार के विभेद का निषेध करता है और एक समावेशी समाज की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत करता है। इसका सामान्य-सा अर्थ यह है कि इस परिप्रेक्ष्य में बच्चों को सामाजिक, जातिगत, आर्थिक, वर्गीय, लैंगिक, शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से भिन्न देखे जाने के बजाय एक अधिगमकर्त्ता के रूप में देखे जाने की आवश्यकता है जिससे लोकतांत्रिक समाज में बच्चे के समुचित समावेशन हेतु वातावरण का सृजन किया जा सके। समावेशन की ठोस प्रक्रिया प्रतीकात्मक लोकतंत्र से भागीदारी आधारित लोकतंत्र का मार्ग प्रशस्त करती है। समावेशी समाज का विकास उसमें निहित संपूर्ण मानवीय क्षमता के कुशलतापूर्वक उपभोग पर निर्भर करता है। समाज के सभी वर्गों की सहभागिता के बिना समावेशी समाज का विकास सम्भव नहीं हो सकता है। अतः शिक्षा समावेशन की प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण औजार है। उन्होंने कहा कि शिक्षा ही वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक बच्चा लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपनी भूमिका के लिए तैयारी करता है और दूसरी ओर समावेशन में बाधक तत्वों से निपटने का सामर्थ्य प्राप्त कर सकता है।

दूसरे विषय-विशेषज्ञ, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के भौतिकी और पदार्थ विज्ञान विभाग के अधिष्ठाता, डॉ. ओ. एस. के. एस. शास्त्री ने कहा कि मूडल प्रशिक्षण छात्रोन्मुख तथा ज्यादा उन्मुक्त कार्यक्रम है। यह उन्मुक्त तरीक़े से सीखने का परिवेश तथा ज्ञान को एक व्यवस्थित तरीक़े से साझा करने की क्षमता देता है। मा. कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने अंतर्दृष्टिपूर्ण वक्तव्य में पाठ्यचर्या के संवर्धन और हिंदी माध्यम से अध्यापन पर ज़ोर दिया। उन्होंने MOOC's और MOODLE द्वारा शिक्षा को वंचितों तक पहुँचने की बात की । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र (कुलसचिव, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा) के संक्षिप्त धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र सम्पन्न हुआ।

प्रथम सत्र में विषय-विशेषज्ञ प्रो. के. श्रीनिवास ने 'पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन' के द्वारा मुक्त शैक्षणिक श्रोत (ओपेन एजूकेशनल रिसोर्स) के बारे में परिचय दिया। उन्होंने बताया कि यह एक नवाचारी शैक्षणिक आन्दोलन है। यह औपचारिक शिक्षा प्रणाली के भीतर सीखने के दायरे का विस्तार करता है और इसकी सीमाओं से परे ले जाता है। मुक्त स्रोत किसी भी सामग्री के उत्पादन, विकास एवं विस्तार की वह प्रक्रिया है जिसमें उत्पादन की खुली प्रक्रिया अपनायी जाती है। उन्होंने मूडल्स की आधारभूत बातें बताईं और प्रतिभागियों से उससे जुड़ने के लिये कहा। अगले सत्र में दूसरे विषय-विशेषज्ञ प्रो. शास्त्री ने इसके व्यावहारिक पक्ष पर बात की। इसमें प्रतिभागियों ने सन्देश, संवाद, चिट्ठाकारिता (ब्लॉगिंग), एसाइनमेंट आदि के बारे में सीखा।

दूसरे दिन **प्रथम सत्र** में प्रो. शास्त्री ने ज्ञान के संवादात्मक तरीक़े और ई-शिक्षा और ज्ञान के रचनात्मक तरीक़े पर बात की। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन लर्निंग, ई-लर्निंग के कई पहलुओं में से एक है जिससे पता चलता है कि शिक्षा के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग कितना लाभकारी है। यह इंटरनेट के माध्यम से शैक्षिक जानकारी देने का एक तरीका है। यह लचीला और स्वयं आत्मसात करने और दूरस्थ शिक्षा के लिए अनुकूल है। शिक्षा के क्षेत्र में आईसीटी के उपयोग ने उन लाखों शिक्षार्थियों के लिए जो दूर के स्थानों से अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाना चाहते हैं, शिक्षा को जारी रखना व जुड़े रहना संभव बना दिया है।

दूसरे दिन के **दूसरे सत्र** में ई-शिक्षा के रचनात्मक उपागम के व्यावहारिक पक्ष पर बात हुई। बताया गया कि 21वीं शताब्दी तकनीकी दृष्टिकोण से बहुत प्रभावशाली सिद्ध हो रही है। यह हर उस चीज का स्वागत कर रही है जो तकनीकी विकास में सहायक है। इसका सबसे ताज़ा उदाहरण है, ई-लर्निंग। आज से कुछ साल पहले शायद यह अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता था कि तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भी इतनी क्रांति आ सकती है, लेकिन यह संभव हुआ और आज ई-लर्निंग का जिस प्रकार तेजी से विस्तार हो रहा है वह हम सबके सामने है। तमाम आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत में ऑनलाइन एजुकेशन का भविष्य उज्ज्वल है। अब ज्यादा से ज्यादा शिक्षण संस्थान इनको अपना रहे हैं, क्योंकि यह बच्चों को नवीनतम शिक्षा उच्च स्तरीय तकनीक के साथ प्रदान कर रही हैं और छात्र भी इस नई तकनीक को काफी पसंद कर रहे हैं। इस सत्र में प्रतिभागियों ने सामान्य नामांकन या खाता खोलना, सामूहिक नामांकन, ई-मेल नामांकन, सूचना पुस्तिका, पुस्तिका, विषयवार और उद्देश्य के आधार पर विषय सामग्री बनाना सीखा। इस तरह इस कार्यशाला में मूडल पर ई-शिक्षा और उसके उपयोग और प्रभावों पर गहन चर्चा हुई तदुपरान्त प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएँ दर्ज की गईं।